Nav Bharat Times. 15th Dec. 08

चिकनपॉक्स की वैक्सीन की किल्लत

नीतू सिंह ॥ नई दिल्ली

चिकनपॉक्स को भी केंद्र सरकार के रूटीन वैक्सीनेशन प्रोग्राम में शामिल करने की मांग की जा रही है। फिलहाल इसकी वैक्सीन महंगी होने और मार्केट में इसकी शॉर्टेज होने के कारण लोगों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। ऐसे में डॉक्टरों का कहना है कि न सिर्फ इसे रूटीन इम्युनाइजेशन प्रोग्राम का हिस्सा बनाना जरूरी है, बल्कि सरकार को इसे सस्ता बनाने और भविष्य में देश में ही इसके प्रॉडक्शन की दिशा में काम करना चाहिए।

दिल्ली में इस साल करीब 3000 लोग चिकनपॉक्स की चपेट में आकर अस्पताल पहुंचे हैं। मगर इसकी वैक्सीन की एक डोज 1500 रुपये की है। इसलिए आम लोग इसे लगवा नहीं सकते। जो इसे अफोर्ड कर सकते हैं उन्हें भी मार्केट में यह मिल नहीं रही है। ऑल इंडिया केमिस्ट फेडरेशन के अध्यक्ष कैलाश गुप्ता का कहना है कि यहां दो कंपनियां ग्लैक्सो और सीरम की वैक्सीन आती है। ये कंपनियां वैक्सीन का प्रॉडक्शन इंडिया में नहीं करतीं, लिहाजा इन्हें इंपोर्ट करना पड़ता है। इसलिए हमेशा ही इसकी शॉर्टेज रहती है। आजकल कुछ ज्यादा कमी है। हालांकि कंपनियों का दावा है कि कुछ दिनों में स्टॉक उपलब्ध हो जाएगा।

वैक्सीन की एक डोज है 1500 रुपये की

हार्ट केयर फाउंडेशन के अध्यक्ष डॉ. के. के. अग्रवाल कहते हैं कि छोटे बच्चों में चिकनपॉक्स होना रूटीन माना जाता है, लेकिन बड़ों में यह काफी खतरनाक होता है। इसलिए वैक्सीन की जरूरत से इनकार नहीं किया जा सकता। केरल से दिल्ली आने वालों को अक्सर चिकनपॉक्स हो जाता है, इसलिए उन्हें जरूर वैक्सीन लगवाना चाहिए। सॉकलैंड हॉस्पिटल के पीडियाट्रिक डिपार्टमेंट के हेड डॉ. संजीव बगई कहते हैं कि अगर सरकार इसे रूटीन वैक्सीनेशन में शामिल कर ले तो न सिर्फ चिकनपॉक्स, बल्कि निमोनिया, ब्लीडिंग, डीहाइड्रेशन और इंसेफलाइटिस जैसी बीमारियां भी नियंत्रित हो जाएंगी। स्वास्थ्य मंत्रालय के अधिकारियों का कहना है कि इस वैक्सीन को सस्ता बनाने के उपायों पर चर्चा हो रही है।

विकसित देश भी अछूते नहीं

अमेरिका में वैक्सीनेशन के बाद भी हर साल 10,600 लोग इसकी चपेट में आकर अस्पताल पहुंचते हैं। यही नहीं इसकी चपेट में आए 100 से 150 लोगों की मौत भी हो जाती है।

कब, कैसे दी जाती है वैक्सीन

12 महीने से 12 साल की उम्र तक के बच्चों को एक डोज और 13 से ऊपर वालों को 6 से 10 हफ्ते के अंतराल में दो डोज दिया जाता है।

किसे है सबसे ज्यादा खतरा

15 वर्ष से कम उम्र के बच्चों में इसका खतरा सबसे ज्यादा होता है। मगर यह बीमारी जितनी बड़ी उम्र में होती है, उतनी ही खतरनाक होती है।

बीमारी के लक्षण

शरीर पर रैशेज, दाने निकलना, तेज बुखार, सिरदर्द, तेज खुजली व थकान महसूस होना।

ऐसे फैलती है बीमारी

चिकनपॉक्स एक संक्रामक बीमारी है। यह मरीज के सीधे कांटेक्ट में आने अथवा उसके खांसने, थूकने आदि से भी फैल सकती है। इसलिए ज्यादा भीड़भाड़ और गंदगी वाले इलाकों में जाने से बचें और बच्चों का खास ख्याल रखें, साफ सफाई रखें और घर में किसी को समस्या हो जाए तो उसे बाकी सदस्यों से अलग रखकर उसकी सफाई, खानपान का विशेष ध्यान रखें।

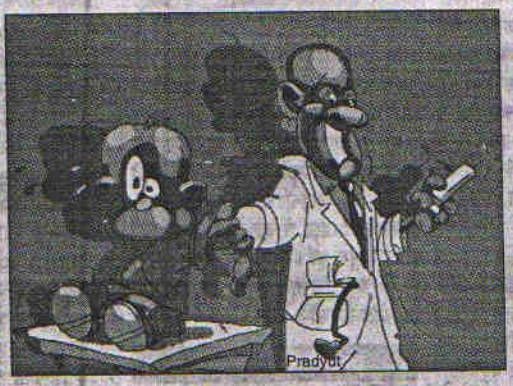

चिकनपॉक्स के खतरे

इसमें वायरल के साथ यदि बैक्टीरियल संक्रमण भी हो जाता है तो मरीज की त्वचा के साथ, हड्डियां, फेफड़े, ज्वाइंट्स और रक्त भी प्रभावित हो सकता है और इस स्थिति में निमोनिया, ब्लीडिंग, डीहाइड्रेशन और इंसेफलाइटिस तक का खतरा रहता है।

...फिर भी सेफ नहीं

वैक्सीन की एक डोज ले चुके 15 से 20 पर्सेंट लोगों में भी ऐसा होना सामान्य माना जाता है, मगर जिन्हें वैक्सीन नहीं मिली है उनमें यह खतरनाक रूप ले सकता है।

Mamtaa Bhatt
(Manager Media & Commu